Education for Peace and Values

शांति एवं मूल्यों के लिए शिक्षा

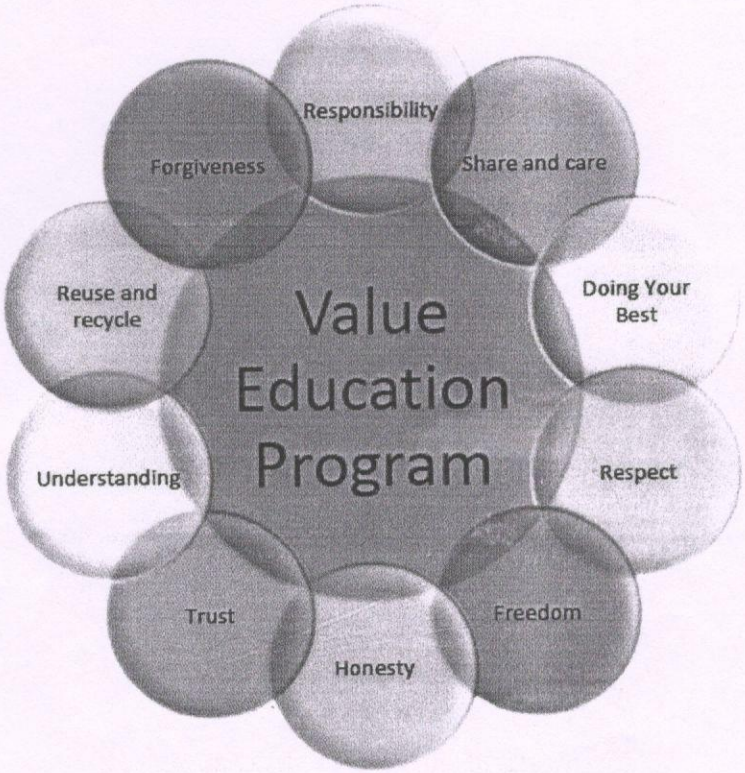

Self Attested

Dr. Chandrakanta Jain

© डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

Education for Peace and Values
शांति एवं मूल्यों के लिए शिक्षा

प्रथम संस्करण - 2016

ISBN : 978-81-89740-10-8

मूल्य - 600.00

वितरक - **प्रांजल प्रकाशन,**
एकांकी मार्ग, सागर, मो. 7694052106

अक्षर संयोजन - **रॉयल कम्प्यूटर्स**
वनवे रोड, सागर (म.प्र.) 470 002
दूरभाष : 07582-244289, 9425452106

प्रकाशक - कृष्णा कम्प्यूटर्स, सागर

■ पुस्तक में लेखकों के विचार उनके अपने हैं,
सम्पादक किसी भी स्थिति में उत्तरदायी नहीं है।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)
(A CENTRAL UNIVERSITY)

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी
कुलपति
Prof. Raghavendra P. Tiwari
Vice-Chancellor

Tel. No. +91 7582 264796 (Off.)
Tel. No. +91 7582 223843 (Res.)
Fax No. +91 7582 264163
E-mail vcsagaruniversity@gmail.com
rptmzu@rediffmail.com
Website www.dhsgsu.ac.in

No. VC/2016/285

// Message //

I am delighted to know that Department of Education is organizing two days National Seminar on **'Education for Peace and Values'** on 15-16 March, 2016.

The theme of the seminar is timely and relevant. Values deals right conduct and good life. Education is the only medium through which values can be inculcated among the citizens. Peace is one of the Eternal Values. Hence, education should be aimed at peace and values. I most sincerely hope that this Seminar will provide a common platform to the students, scholars and teachers of different streams to share their views on its focal theme.

I am pleased to learn that quality papers will also be published in Seminar Proceedings. I extend my best wishes for the successful organization of this event.

Sagar
Dated: 09-03-2016

(Prof. Raghavendra P. Tiwari)

वैज्ञानिक, सच्चा धार्मिक और आदर्श नेता होता है। ये गुण एक निश्चिंत, तनाव रहित, शांत और समत्वपूर्ण जीवन जीने की दिशा निर्धारित करते हैं।

इन गुणों से युक्त व्यक्तित्व ही समाज की एक स्वस्थ इकाई का प्रतिरूप है। चूंकि व्यक्तियों से ही समाज बनता है, और समाज की सभी इकाईयां जब इस आदर्श व्यक्तित्व से परिपूर्ण (समन्वित) होंगी तो ही एक स्वास्थ, सबल, उन्नत और आदर्श समाज व विश्व का निर्माण होगा। जिसमें वर्तमान में व्याप्त समस्त अमर्ष और अमंगलकारी स्थितियों, यतः आतंकवाद, तनाव, कुंठा, संघर्ष, पर्यावरण प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार, महामारी सामाजिक–धार्मिक वैमनस्य, आर्थिक असंतुलन से उत्पन्न वर्ग संघर्ष आदि समस्याओं का समाधान, (निराकरण) स्वतः हो जाता है और उत्पन्न होती है यथार्थ रूप में विश्वशांति।

संदर्भ

1. 'शिक्षा तथा भारतीय समाज', डॉ. डी.एल. शर्मा, 1984 लायल बुक डिपो मेरठ
2. 'शैक्षिक समाज शास्त्र', डॉ. रामनाथ शर्मा, 1996, अटलांटिक पब्लिशर्स, न्यू देहली
3. 'शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठ भूमि' – डॉ. रामशक्ल पांडे 1995 विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
4. आदि पुराण – आचार्य जिनसेन
5. गीता सार
6. 'दैनिक भास्कर' समाचार पत्र (रविवारीय)
7. 'नई आजादी उद्घोष' मासिक पत्रिका इलाहाबाद से प्रकाशन संपादक प्रो. बनवारी लाल शर्मा
8. 'भारतीय पक्ष' मासिक नई दिल्ली संपादक (विमल कुमार सिंह)

2

सामाजिक मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका

धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ

सहायक प्राध्यापक, षिक्षाषास्त्र विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय सागर

मानव एक भावनाशील प्राणी है तथा मानव के विभिन्न व्यवहार उसके विभिन्न प्रकार के भावनाओं से नियंत्रित होता है। मनुष्य विभिन्न परिस्थितियों मे विभिन्न प्रकार के व्यवहार अथवा आचरण करता है जिससे उसे विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न प्रकार की प्रतिक्रियायें प्राप्त होती है। समाज में मनुष्य चेतन तथा अचेतन अवस्था में विभिन्न प्रकार के सकारात्मक तथा नकारात्मक आचरण करता है जिसको समाज द्वारा स्वीकृत अथवा तिरष्कृत किया जाता है। जिस आचरण को समाज स्वीकृति प्रदान करता है। उसे ही मनुष्य अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है तथा जिस आचरण को समाज स्वीकृति प्रदान नहीं करता उसे मनुष्य छोड़ता है। समाजीकरण की प्रक्रिया में मनुष्य समाज से विभिन्न प्रकार के आचरणों को सीखता है। इसप्रकार समाज द्वारा स्वीकृत आचरणों की एक आचरण संहिता का निर्माण होता है जिसका पालन कर व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये सर्वदा अग्रसर होता रहता है। जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये मनुष्य अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता है अर्थात् व्यक्तित्व का विकास करने वाली, समाज से स्वीकृत आचरण संहिता ही मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित होती है जिसमें स्वयं मनुष्य की धारणायें विचार, आदर्श, मनोवृत्ति एवं आस्था–विश्वास इत्यादि सम्मिलित होती है तथा मनुष्य इन्ही के ही मार्गदर्शन में अपनी जीवन की नैया इस संसार रूपी भव सागर में खेता है।

मूल्य का शाब्दिक अर्थ किसी वस्तु की कीमत, गुण, विशेषता अथवा उपयोगिता से लगाया जाता है। साधारण अर्थो में मूल्य के तीन तात्पर्य निकाले जाते है जैसे किसी गुण या विशेषता का स्तर, व्यवहार करने के उचित प्रतिमान तथा व्यक्ति की पसंद अथवा प्राथमिकतायें, ये तीनों मूल्य के अर्थ में समाहित हैं। किसी भी समाज का विकास उसके अन्तर्निहित मूल्यों के आधार पर किया जाता है। समाज अपने विकास की श्रृंखला में जितने उत्कृष्ठ मूल्यों को स्थापित करता है, वह